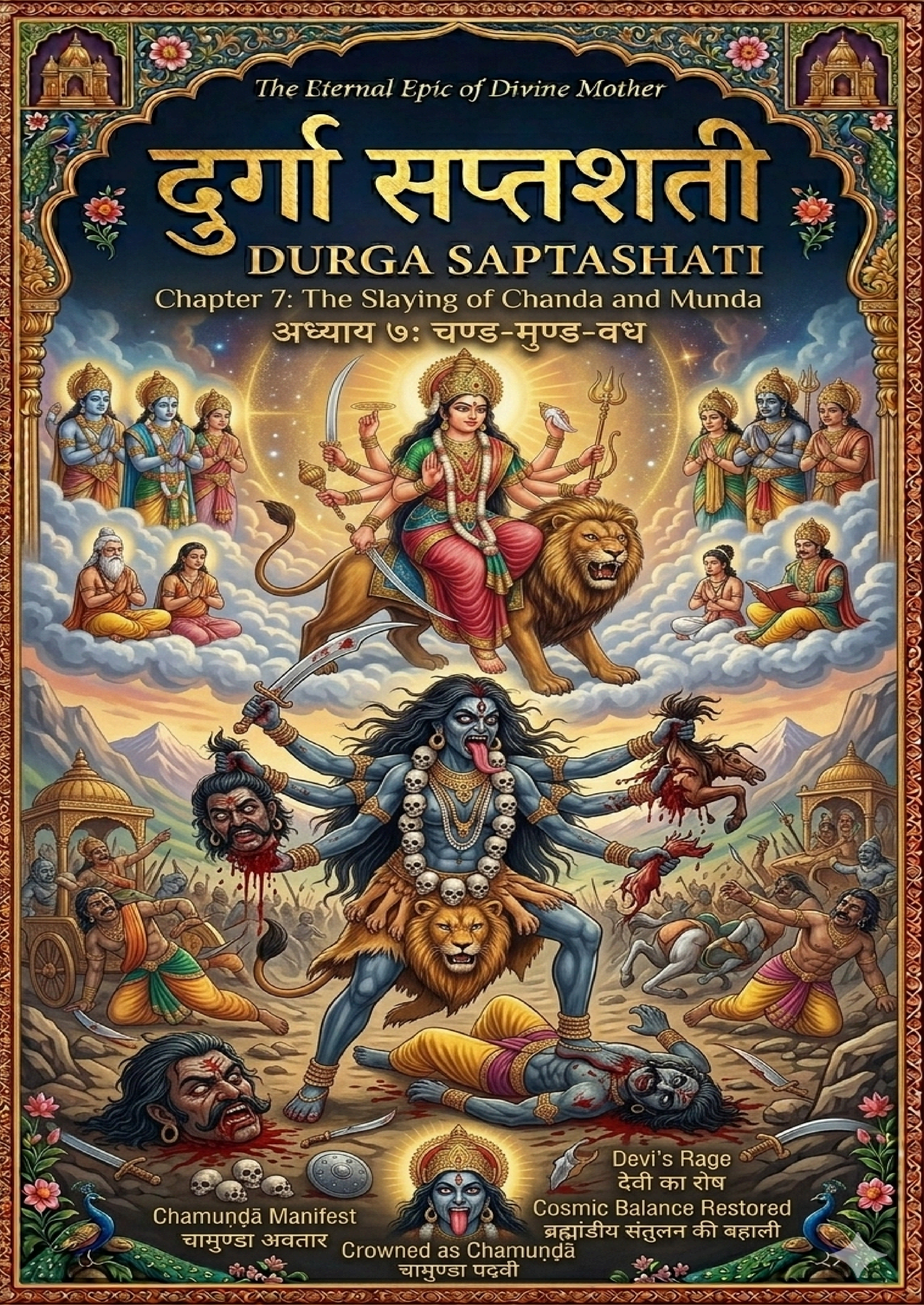
The Eternal Epic of Divine Mother
दुर्गा सप्तशती
DURGA SAPTASHATI
Chapter 7: The Slaying of Chanda and Munda
अध्याय ७: चण्ड-मुण्ड-वध
Devi's Rage
देवी का रोष
Cosmic Balance Restored
ब्रह्मांडीय संतुलन की बहाली
Chamuṇḍā Manifest
चामुण्डा अवतार
Crowned as Chamuṇḍā
चामुण्डा पदवी

Durga Saptashati

|| 'सप्तम अध्याय' ||

—

Numerology By Nehaa

Connect on WhatsApp for Consultation: 8802673153

दुर्गा सप्तशती - अध्याय 7 (चण्ड और मुण्ड का वध) का सारांश

शुम्भ की आज्ञा पाकर चण्ड और मुण्ड नामक दैत्य अपनी चतुरंगिणी सेना के साथ अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होकर देवी को पकड़ने के लिए हिमालय के सुवर्णमय शिखर पर पहुँचे। उन्होंने सिंह पर बैठी, मंद-मंद मुस्कुराती हुई देवी को देखा और उन्हें पकड़ने का प्रयास करने लगे।

शत्रुओं को देखकर अम्बिका को अत्यधिक क्रोध आया, जिससे उनका मुख काला पड़ गया। उनके ललाट से तुरंत विकरालमुखी काली देवी प्रकट हुईं। वे तलवार और पाश धारण किए हुए थीं, उनका शरीर हड्डियों का ढाँचा मात्र था, वे चीते के चर्म की साड़ी और नर-मुण्डों की माला पहने थीं। उनकी विशाल जीभ लपलपा रही थी और भयंकर गर्जना से दिशाएँ गूँज रही थीं।

काली देवी अत्यंत वेग से दैत्यों की सेना पर टूट पड़ीं और बड़े-बड़े असुरों को भक्षण करने लगीं। उन्होंने हाथियों, घोड़ों, रथों और सैनिकों को एक ही हाथ से पकड़कर मुँह में डाल लिया और भयानक रूप से चबा डाला। कुछ को उन्होंने तलवार से, कुछ को खट्वाङ्ग से मारा और कुछ को अपने दाँतों से पीस डाला।

क्षण भर में पूरी सेना को नष्ट होते देख, चण्ड और मुण्ड काली देवी की ओर दौड़े। मुण्ड ने बाणों और चक्रों की वर्षा से देवी को ढक दिया, जो उनके मुख में समा गए।

तब काली ने अत्यंत रोष में भरकर विकट अट्टहास किया और बड़ी तलवार हाथ में लेकर 'हं' का उच्चारण करते हुए चण्ड पर धावा बोला। उन्होंने चण्ड के केश पकड़कर उसका मस्तक काट डाला। चण्ड को मरा देख मुण्ड भी दौड़ा, जिसे देवी ने तलवार से घायल करके धरती पर गिरा दिया।

चण्ड और मुण्ड के मारे जाने पर बची हुई सेना भयभीत होकर भाग गई। इसके बाद, काली देवी ने चण्ड और मुण्ड के कटे हुए मस्तक चण्डिका के पास ले जाकर प्रचंड अट्टहास करते हुए कहा कि ये दो महापशु उन्हें भेंट हैं, अब वे स्वयं शुम्भ और निशुम्भ का वध करें।

चण्ड-मुण्ड के मस्तक देखकर कल्याणमयी चण्डी ने काली से मधुर वाणी में कहा: 'देवि! तुम चण्ड और मुण्ड को लेकर मेरे पास आई हो, इसलिए संसार में तुम चामुण्डा के नाम से विख्यात होगी।'

Durga Saptashati
|| 'सप्तम अध्याय' ||

Chapter 7 :

चण्ड और मुण्डका वध

॥ ध्यान ॥

मैं मातङ्गी देवी का ध्यान करता (करती) हूँ। वे रत्नमय सिंहासन पर बैठकर पढ़ते हुए तोते का मधुर शब्द सुन रही हैं। उनके शरीर का वर्ण श्याम है। वे अपना एक पैर कमलपर रखे हुए हैं। और मस्तक पर अर्धचन्द्र धारण करती हैं तथा कहार पुष्पों की माला धारण किए वीणा बजाती हैं। उनके अङ्ग में कसी हुई चोली शोभा पा रही है। वे लाल रंगकी साड़ी पहने हाथमें शङ्खभय पात्र लिये हुए हैं। उनके वदन पर मधुका हलका-हलका प्रभाव जान पड़ता है और ललाट में बेदी शोभा दे रही है।

ऋषि कहते हैं -॥ तदनन्तर शुम्भ की आज्ञा पाकर वे चण्ड-मुण्ड आदि दैत्य चतुरङ्गिणी सेनाके साथ अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित हो चल दिये॥

फिर गिरिराज हिमालयके सुवर्णमय ऊँचे शिखरपर पहुँचकर उन्होंने सिंहपर बैठी देवीको देखा। वे मन्द मन्द मुसकरा रही थीं॥

उन्हें देखकर दैत्य लोग तत्परता से पकड़ने का उद्योग करने लगे। किसीने धनुष तान लिया, किसीने तलवार सँभाली और कुछ लोग देवीके पास आकर खड़े हो गये॥

तब अम्बिकाने उन शत्रुओंके प्रति बड़ा क्रोध किया। उस समय क्रोध के कारण उनका मुख काला पड़ गया॥

ललाटमें भौहें टेढ़ी हो गयीं और वहाँ से तुरंत विकरालमुखी काली प्रकट हुई, जो तलवार और पाश लिये हुए थीं॥

वे विचित्र खट्वाङ्ग धारण किये और चीतेके चर्मकी साड़ी पहने नर-मुण्डों की मालासे विभूषित थीं। उनके शरीर का मांस सूख गया था, केवल हड्डियोंका ढाँचा था, जिससे वे अत्यन्त भयंकर जान पड़ती थीं॥

उनका मुख बहुत विशाल था, जीभ लपलपाने के कारण वे और भी डरावनी प्रतीत होती

थीं। उनकी आँखें भीतरको धँसी हुई और कुछ लाल थीं, वे अपनी भयंकर गर्जना से सम्पूर्ण दिशाओं को गुँजा रही थीं॥

बड़े-बड़े दैत्योंका वध करती हुई वे कालिकादेवी बड़े वेगसे दैत्योंकी उस सेनापर टूट पड़ीं और उन सबको भक्षण करने लगीं॥

वे पार्श्वरक्षकों, अङ्कुशधारी महावतों, योद्धाओं और घण्टासहित कितने ही हाथियोंको एक ही हाथसे पकड़कर मुँहमें डाल लेती थीं॥

इसी प्रकार घोड़े, रथ और सारथिके साथ रथी सैनिकोंको मुँहमें डालकर वे उन्हें बड़े भयानक रूपसे चबा डालती थीं॥

किसीके बाल पकड़ लेतीं, किसीका गला दबा देतीं, किसीको पैरोंसे कुचल डालतीं और किसीको छातीके धक्केसे गिराकर मार डालती थीं॥

वे असुरोंके छोड़े हुए बड़े-बड़े अस्त्र-शस्त्र मुँहसे पकड़ लेतीं और रोषमें भरकर उनको दाँतोंसे पीस डालती थीं॥

कालीने बलवान् एवं दुरात्मा दैत्योंकी वह सारी सेना रौंद डाली, खा डाली और कितनोंको मार भगाया॥

कोई तलवारके घाट उतारे गये, कोई खट्वाङ्गसे पीटे गये और कितने ही असुर दाँतोंके अग्रभागसे कुचले जाकर मृत्युको प्राप्त हुए॥

इस प्रकार देवीने असुरोंकी उस सारी सेनाको क्षणभरमें मार गिराया। यह देख चण्ड उन अत्यन्त भयानक कालीदेवी की ओर दौड़ा॥

तथा महादैत्य मुण्डने भी अत्यन्त भयंकर बाणोंकी वर्षासे तथा हजारों बार चलाये हुए चक्रोंसे उन भयानक नेत्रोंवाली देवीको आच्छादित कर दिया॥

वे अनेकों चक्र देवीके मुखमें समाते हुए ऐसे जान पड़े, मानो सूर्यके बहुतेरे मण्डल बादलोंके उदरमें प्रवेश कर रहे हों॥

तब भयंकर गर्जना करनेवाली कालीने अत्यन्त रोषमें भरकर विकट अट्टहास किया। उस समय उनके विकराल वदनके भीतर कठिनतासे देखे जा सकनेवाले दाँतोंकी प्रभासे वे अत्यन्त उज्ज्वल दिखायी देती थीं॥

देवीने बहुत बड़ी तलवार हाथमें ले 'हं' का उच्चारण करके चण्डपर धावा किया और उसके केश पकड़कर उसी तलवारसे उसका मस्तक काट डाला॥

चण्डको मारा गया देखकर मुण्ड भी देवीकी ओर दौड़ा। तब देवीने रोष में भरकर उसे भी तलवार से घायल करके धरती पर सुला दिया॥

महापराक्रमी चण्ड और मुण्डको मारा गया देख मरनेसे बची हुई बाकी सेना भयसे व्याकुल हो चारों ओर भाग गयी॥

तदनन्तर कालीने चण्ड और मुण्डका मस्तक हाथमें ले चण्डिकाके पास जाकर प्रचण्ड अट्टहास करते हुए कहा -॥

'देवि! मैंने चण्ड और मुण्ड नामक इन दो महापशुओं को तुम्हें भेंट किया है। अब युद्ध यज्ञ में तुम शुम्भ और निशुम्भ का स्वयं ही वध करना॥

ऋषि कहते हैं -॥ वहाँ लाए हुए उन चण्ड-मुण्ड नामक महादैत्यों को देखकर कल्याणमयी चण्डी ने काली से मधुर वाणी में कहा -॥

'देवि! तुम चण्ड और मुण्डको लेकर मेरे पास आयी हो, इसलिये संसारमें चामुण्डा के नामसे तुम्हारी ख्याति होगी॥

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेय पुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत

देवी माहात्म्य में 'चण्ड-मुण्ड-वध' नामक सातवाँ अध्याय पूरा हुआ ॥

Durga Saptashati
|| 'Saptam Adhyay' ||

Chapter 7:

The Slaying of Chanda and Munda

|| **Dhyana (Meditation)** ||

I meditate upon Goddess Matangi. She is seated on a jeweled throne, listening to the sweet voice of a reading parrot. The color of her body is dark (Shyam). She has one foot placed on a lotus and wears a half-moon on her forehead. She is adorned with a garland of Kahlara flowers and plays a Veena. A tightly fitted bodice adorns her body. She wears a red sari and holds a conch-shell filled with wine in her hand. A slight effect of mead (wine) is visible on her face, and a Bindi (ornamental dot) beautifies her forehead.

The Rishi said -|| Thereafter, having received the command of Shumbha, those demons, Chanda and Munda, along with the four-fold army, equipped with weapons, set out.

Then, reaching the high golden peak of the King of Mountains, the Himalayas, they saw the Goddess seated upon a lion. She was smiling gently.

Seeing her, the demons immediately began efforts to capture her. Some bent their bows, some readied their swords, and some approached and stood near the Goddess.

Then Ambika became greatly angered at those enemies. At that time, her face turned black due to anger.

Her eyebrows on the forehead became furrowed, and immediately, Kali, the fierce-faced one, appeared from there, holding a sword and a noose.

She wore a strange Khadwanga (a club with a skull at the top) and a sari made of a cheetah's hide, and was adorned with a garland of human skulls. The flesh of her body was dried up, leaving only a skeletal frame, which made her appear extremely terrifying.

Her mouth was very vast, and with her tongue lolling out, she appeared even more dreadful. Her eyes were sunken and slightly red, and she was making all directions resound with her terrible roar.

Slaying the mighty demons, that Goddess Kalika quickly fell upon the army of the demons and began to devour them all.

She would grab and throw into her mouth many elephants, along with their bodyguards, mahouts holding an Ankusha (goad), warriors, and bells, all with one hand.

Similarly, she would put into her mouth and chew with a terrible noise, horses, chariots, and the charioteer-warriors along with their chariots.

She would grab some by the hair, throttle some by the neck, crush some under her feet, and kill some by striking them with her chest.

She caught the large weapons thrown by the Asuras with her mouth and, filled with rage, ground them with her teeth.

Kali trampled, ate, and chased away many of that entire army of strong and wicked demons.

Some were put to the sword, some were beaten with the Khadwanga, and many Asuras were crushed by the tips of her teeth and met their death.

In this manner, the Goddess destroyed that entire army of Asuras in an instant. Seeing this, Chanda rushed towards that extremely terrifying Goddess Kali.

And the great demon Munda also covered that Goddess of terrible eyes with a shower of extremely frightening arrows and thousands

of hurled Chakras (discus).

Those many Chakras entering the mouth of the Goddess appeared as if many solar discs were entering the belly of the clouds.

Then, the terrifyingly roaring Kali, filled with intense anger, let out a fierce burst of laughter (Attahasa). At that time, her dreadful face appeared exceedingly bright due to the light of her teeth, which were difficult to see inside.

The Goddess took a very large sword in her hand, uttered "Hum," and charged at Chanda, grabbing his hair and cutting off his head with the same sword.

Seeing Chanda killed, Munda also ran towards the Goddess. Then the Goddess, in rage, wounded him with a sword and laid him upon the earth.

Seeing the mighty Chanda and Munda slain, the remaining army, frightened, fled in all directions.

Thereafter, Kali took the heads of Chanda and Munda in her hands, approached Chandika, and said with a thunderous laugh:

'Devi! I offer you these two great beasts named Chanda and Munda. Now, you yourself slay Shumbha and Nishumbha in this sacrifice of war.'

The Rishi said -॥ Seeing those great demons named Chanda and Munda brought before her, the benevolent Chandika spoke to Kali in sweet words:

'Devi! Since you have come to me bringing Chanda and Munda, your fame in the world will be as Chamunda.'

Thus, in the Shri Markandeya Purana, in the story of the Savarnika Manvantara,

The seventh chapter, named 'The Slaying of Chanda and Munda' in Devi Mahatmya, is completed.

Numerology By Nehaa

Connect on WhatsApp for Consultation: 8802673153

Our Services

- Name Correction
- Lo Shu Grid reading
- Missing Number Remedies
- Business Name Correction
- Baby Name Correction
- Kundali Matching
- Lucky Mobile Number
- Lucky House Number
- Lucky Vehicle Number
- Home Vastu
- Office Vastu

Free Numerology Tools

- Numerology Name Calculator
- Lo Shu Grid Calculator
- Lucky Mobile Number Calculator
- Lucky Vehicle Number Calculator
- Numerology Kundali Matching Tool